रोडवेज का चक्का जाम होने के बाद दिया वेतन, यात्री रहे परेशान, सरकार को घाटा अलग से

बल्लबगढ (म.मो.) फ़रवरी माह का वेतन जो तमाम सरकारी कर्मचारियों को पहली मार्च तक मिल जाता है, यहां के करीब 1500 रोडवेज कर्मचारियों को 21 मार्च तक भी नहीं मिला तो सभी कर्मचारी हड़ताल पर चले गये। इसके परिणाम स्वरूप विभिन्न रूटों पर चलने वाली करीब 150 बसों का चक्का एकदम जाम हो गया। जाहिर है इससे बस यात्रियों के लिये भारी संकट की स्थिति बन गयी। दुगने-तिगुने दामों पर वैकल्पिक साधनों से उन्हें यात्रा करनी पड़ी। इसके अलावा सरकारी परिवहन विभाग को लाखों का जो घाटा हुआ वह अलग से।

चक्का जाम करने से 10-12 दिन पूर्व भी 2 बार रोडवेज कर्मियों ने वेतन देने के लिये डिपो में प्रदर्शन किया था। परन्तु पूरी तरह शिथिल एवं बेपरवाह हो चुके प्रबन्धन पर इसका कोई असर नहीं हुआ तब मजबूरन कर्मचारियों को हड़ताल जैसे हथियार का इस्तेमाल करना पड़ा। यदि प्रबन्धन अपने वैधानिक दायित्व का वहन करते हुए निश्चित समय पर वेतन अदा कर देता तो क्यों यात्रियों को भारी परेशानी झेलनी पड़ती और क्यों एक दिन की कमाई का नुकसान परिवहन विभाग को उठाना पड़ता?

लेकिन इतनी समझ न तो सरकार को है और न ही प्रशसन को। इस तरह का ड्रामा कोई पहली बार नहीं हुआ है। हर साल 2-4 बार इस तरह के ड्रामे, राज्य भर में कहीं न कहीं होते रहते हैं। जो बात प्रबन्धन को स्वत: समझ में नहीं आती वह हड़ताल की भाषा से तुरंत समझ में आ जाती है।

भारी घाटे में चलने वाला रोडवेज ऐसा महकमा है जिसे यदि ठिक से चलाया जाये तो इतना कमा कर दे सकता है कि राज्य की दरिद्रता दूर हो जाये। परन्तु महकमे की हर शाख पर बैठे उल्लू इसका सत्यानाश करने पर तुले हैं। इस डिपो की 309 बसों में से आधी से अधिक चलने लायक नहीं हैं। वे चलने लायक हो सकती थीं यदि सही ढंग की वर्कशॉप में पर्याप्त मात्रा में सही मिस्त्री आदि होते। मूर्खों की सरकार वर्कशॉप का खर्च बचा कर खुश है लेकिन कंडम हुई जा रही बसों से होने वाले नुक्सान की कोई चिन्ता नहीं। पक्के एवं स्थाई ड्राइवर-कंडेक्टर के बदले में ठेकेदारी में कच्चे रख कर बचत करने की तो सरकार सोचती है लेकिन ऐसे ग़ैर जिम्मेदार स्टाफ़ से जो नुकसान होता है उसकी कोई चिंता नहीं।

कई-कई माह तक डिपुओं के महाप्रबन्धक व अन्य स्टाफ़ की पोस्टें खाली पड़ी रहती हैं। ऐसे में डिपो राम भरोसे ही चलते हैं। घाटा हो या नफ़ा कोई पूछने वाला नहीं। छोटी-छोटी खरीदारी से लेकर बसों तक की खरीदारी चंडीगढ में बैठे मंत्री व अफ़सरों ने अपनी मुट्ठी में रखी हैं। मकसद केवल कमीशन की सीधी वसूली। इसी कमीशन के चक्कर में स्टाफ़ हो न हो पर बसें थोक में खरीद ली जाती हैं। यूं ही नहीं कमाई वाला यह विभाग भारी घाटे वाला बना दिया गया है।

मल्टी मॉडल सिस्टम का नया शगूफ़ा, बसों को चला पाने में पूरी तरह से नाकाम सरकार

मैट्रो रेल, बस अड्डे व रेलवे स्टेशन को एक विशेष कॉरीडोर से जोड़ने के नाम पर एक नया ड्रामा करने जा रही है। इस का ठेका एचएसआईडीसी (हरियाणा स्टेट औद्योगिक विकास निगम) को दिया गया है। विदित है कि यह निगम खुद कभी कुछ नहीं करता। किसी भी काम को आगे ठेके पर देकर उसमें से मोटा कमीशन खाना इसका मुख्य धंधा है। बल्लबगढ के आईएमटी (औद्योगिक मॉडल टाऊन) के नाम पर किसानों से ज़मीने छीन कर मोटे मुनाफ़े पर आगे बेचने वाले संस्थान और कोई नहीं यही एचएसआईडीसी है।

करोड़ों रुपये की लागत से बनने वाला यह एमएमटीएस आखिर है क्या? यह एक ऐसा गलियारा होगा जिस पर चल कर यात्री मैट्रो रेल से बस अड्डे व रेलवे स्टेशन तक जा सकेंगे। तो क्या अभी तक लोग इन जगहों तक नहीं जा पा रहे हैं। सैंकड़ों वर्ष पुराने बने रेलवे स्टेशन के साथ हरियाणा रोडवेज ने अपना बस अड्डा बनाया। उसके बाद अब मैट्रो रेल ने अपना स्टेशन बिल्कुल बस अड्डे से सटा कर बना दिया है। मैट्रो रेल सेवा चालू होने में अभी कुछ समय है। लेकिन मैट्रो से बस अड्डे व रेलवे स्टेशन जाने का रास्ता बरसों पुराना है। हां इस पर यदि कोई कठिनाई है तो वह है अवैध कब्ज़ों व अवैध पार्किंग की। टूटी-फूटी व गड्ढों वाली सड़क पर चलने की, खासतौर पर बरसाती पानी के खड़े होने पर व रात के अंधेरे में चलने की।

जाहिर है यह सब स्थानीय प्रशासन एवं नगर निगम की हरामखोरी व रिश्वतखोरी के चलते ही है। यदि प्रशासन ढंग से काम करे तो मौजूदा रास्ते को ही सुविधाजनक बनाया जा सकता है। परन्तु ऐसा करने पर एचएसआई डीसी के माध्यम से जो करोड़ों की लूट अफ़सर और नेता करने वाले हैं, वह कैसे हो पायेगी?

चार साल पहले मार दिया गया था 39 भारतीयों को, भारत सरकार अब उनके कंकाल लाएगी, मोदी की सुपरमैन छवि की खातिर झूठ बोलती रही थी अब तक

(जनज्वार विशेष) इराक में 2014 में मारे गए मजदूरों का सच अगर केंद्र सरकार उसी समय बता देती तो मोदी की वैश्विक नेता बनाने की भाजपाई कोशिश को बट्टा लग जाता और लोग मान लेते कि उनका नेता बेहद कमजोर है। एक बार नहीं सात बार संसद से लेकर सड़क तक मोदी सरकार नेदावा किया था कि 39 फसे भारतीय जिंदा हैं, पर अब बताया कि 4 साल पहले ही कर दिए गए थे दफन।

जून 2014 यानी चार साल पहले इराक के मोसुल में अगवा हुए 39 भारतीयों को आईएसआईएस ने मौत के घाट उतार दिया था। यह खबर सामने आने के बाद भी मोदी सरकार दावा करती रही कि सभी भारतीय सुरक्षित हैं उन्हें जल्द ही देश में वापस लाया जाएगा। आईएसआईएस के कब्जे में फंसे भारतीयों के मारे जाने की खबर कोरी अफवाह है।

संसद से लेकर सड़क तक मोदी सरकार ने यह फर्जी दावा एक बार नहीं 7 बार किया। पहला बयान 23 जून 2014 को, दूसरा 16, 17 और 24 जुलाई 2014 को, फिर 22 अगस्त 2014, उसके बाद 22 जुलाई 2015 और 16 जुलाई 2017 को दिया। भारत सरकार द्वारा दिए गए ये सभी बयान इस बात के दावेदारी के थे कि सभी 39 श्रमिक जिंदा हैं।

मगर अचानक इस दावे से पलटी मारते हुए हमारी माननीय विदेश मंत्री महोदया सुषमा स्वराज ने खुलासा किया कि इराक के बादोश गांव में चार साल से 39 भारतीयों के शव दफन हैं। आईएसआईएस द्वारा अगवा किए गए सभी भारतीय मार डाले गए हैं। अब मोदी सरकार उनका सिर्फ कंकाल लाएगी, वह भी अगर ले आ पाई तो।

सरकार अपने ही देश के नागरिकों की जिंदगियों को लेकर न सिर्फ संवेदनशीलता के स्तर पर गफलत में रखने का गुनाह किया, बल्कि अपनी जनता के साथ एक सरकार द्वारा किया गया फरेब भी है। क्या एक जनता के लिए बनी सरकार जनता के साथ ही 420 की तरह पेश आ सकती है।

इसमें गौर करने वाली बात यह भी है कि आईएसआईएस के चंगुल से बचकर निकले हरजीत मसीह ने सभी भारतीय मजदूरों के मारे जाने की पुष्टि पहले ही खबर कर दी थी, मगर सरकार ने उसको झूठा करार दे दिया था। न सिर्फ झूठा करार दिया बल्कि 6 महीने जेल में रखा। वह पिछले 4 सालों से कह रहा है कि उसके साथ के सभी 39 लोगों को मार दिया गया।

पर सरकार हरजीत मसीह के दावे को इसलिए कान नहीं देती रही क्योंकि इससे मोदी की माहन बनती वैश्विक छवि में बट्टा लग जाता। देश समझ जाता कि मोदी के खोखले दावे हैं जो वह और उनकी पार्टी एक मजबूत वैश्विक नेता पर उन्हें पेश कर रहे हैं। पाठकों को याद होगा कि मोदी के 2014 में सत्ता में आने के बाद करीब 2 साल तक मोदी विदेश दौरों के द्वारा एक वैश्विक नेता बनने के प्रायोजित प्रचार में लगे थे। यह बात इसलिए भी रेखांकित की जानी चाहिए क्योंकि इसी साल मोदी अपने को पूरी दुनिया के मजबूत नेताओं में शामिल कराने की जुगत में लगे थे और दूसरी तरफ उनके ही लोगों को आईएसआईएस ने मार डाला था।

हमारी विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने तो यहां तक कहा था कि हरजीत मसीह सरासर झूठ बोल रहा है। अब जब खुद सुषमा ने इस खबर की पुष्टि की कि सभी 39 भारतीय मारे जा चुके हैं, उसके बाद मसीह एक बार फिर मीडिया के सामने आए हैं।

सवाल उठने शुरू हो गए हैं कि आखिर क्यों इतने सालों तक सरकार मृतकों के परिजनों और देश को गुमराह करती रही। विपक्षी दलों ने आरोप लगाने शुरू कर दिए हैं कि अपने राजनीतिक फायदे के लिए सरकार ने अब तक इन मौतों का खुलासा नहीं किया था। वह अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकती रही और मृतकों के बीच में से लौटे मसीह की बात पर भी यकीन नहीं किया, बल्कि उसे झूठा करार दे दिया।

सुषमा स्वराज ने 26 जुलाई 2017 को लोकसभा में दिए एक बयान में कहा था, 'न हमें लाशें मिलीं, न हमें खून के धब्बे मिले। एक व्यक्ति कह रहा है कि वो मार दिए गए। हमारा सोर्स कह रहा है कि वो जिंदा हैं। तो मुझे क्या करना चाहिए। उन्हें मृत मानकर तलाश छोड़ देनी चाहिए या उनकी तलाश जारी रखनी चाहिए? मैं उन लोगों से सीधे संपर्क में नहीं हूं। मेरे पास उनके जिंदा होने के सबूत नहीं हैं लेकिन मेरे पास उनके मारे जाने के सबूत भी नहीं हैं।'

पर अब नाटकीय बयान विदेश मंत्री का ये आया है...

चूंकि अब तक इस बात के प्रमाण नहीं थे कि मारे गए लोग भारतीय ही हैं, इसलिए हमने इस बात की पुष्टि नहीं की थी। मोसुल में दफन भारतीयों के डीएनए के सैंपल रेतीली मिट्टी से लेकर उनके परिजनों के साथ मैच किए गए, जो मैच हो चुके हैं।

गौरतलब है कि इराक में मारे गए इन भारतीयों के शवों की एक सामूहिक कब्र मिली है। इस बात की पुष्टि इराकी प्रशासन ने भी कर दी है। जून 2017 में मोसुल को आईएसआईएस से मुक्त कराया था।

इराक प्रशासन के मुताबिक पिछले साल जो शव एक सामूहिक कब्र में मिले थे, वो उन्हीं भारतीय मजदूरों के थे, जिन्हें 2014 में आईएसआईएस ने मोसुल में बंधक बनाकर मौत की नींद सुला दिया गया था। जहां पर 39 लोगों की सामूहिक कब्र बरामद हुई वह उत्तर-पश्चिम में बादोश गांव है जिसे पिछले साल ही इराकी बलों ने अपने कब्जे में लिया है। इराक के शहीद संस्थान के प्रमुख ने भी इस बात की पुष्टि कर दी थी कि 39 शवों में 38 की पहचान की जा चुकी है।

मोसुल पर कब्जा करने के बाद आईएसआईएस ने भारत के 40 मजदूरों को भी बंधक बना लिया था। इनमें से एक मजदूर हरजीत मसीह अपनी जान बचाने में सफल हुआ था।

आईएसआईएस के चंगुल से बचकर निकले हरजीत मसीह के मुताबिक, आतंकी हम 40 लोगों को बंधक बनाने के कुछ दिनों बाद बाहर ले गये, जहां पर हमें गोलियों से भून दिया गया। मैं किसी तरह बांग्लादेशी नागरिक की पहचान बताकर वहां से निकलने में कामयाब हो पाया। मृतकों के परिजन चीख—चीखकर सरकार से सवाल कर रहे हैं कि आखिर मोदी सरकार ने उन्हें क्यों अंधेरे में रखा। बजाय सरकार के उन्हें अपनों के मरने की खबर मीडिया से मिली।

गुरमीत राम रहीम के करोड़ों शिष्य थे

हिमांशु कुमार

गुरमीत राम रहीम के करोड़ों शिष्य थे, उनमें विज्ञान की पढ़ाई पढ़े हुए डाक्टर, इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, नेता, अफसर सभी थे, वह शराबी, अय्याश, गुंडा और बलात्कारी था, उसे यह सभी बुद्धिमान लोग भगवान मानते थे, और लोगों के मूर्ख बने रहने का सिलसिला कोई एक दो घंटे के लिए नहीं हुआ.....

लोग सत्ताईस साल तक मूर्ख बनते रहे, आज भी गुरमीत राम रहीम के भक्तों की संख्या में कमी नहीं आयी है।

एक खबर देख रहा था कि पिछले हफ्ते गुरमीत राम रहीम के ऑन लाइन फालोवर्स की संख्या में लाखों लोगों का इजाफा हुआ है, कैसे हुआ यह जादू कि इतने करोड़ लोग मूर्ख बने रहे, और आज भी बन रहे हैं?

ऐसा कीजिये किसी खुली टोकरी में कुछ केंकड़े रख दीजिये, देखिएगा उनमें से एक भी केंकड़ा निकल कर भाग नहीं पायेगा, क्योंकि जैसे ही कोई एक केंकड़ा आज़ाद होने के लिए ऊपर चढ़ेगा दूसरे केंकड़े उसकी टांग पकड कर वापिस टोकरी के भीतर गिरा लेंगे। और इस तरह आपके सारे केंकड़े टोकरी में ही बने रहेंगे।

गुरमीत राम रहीम के डेरे का कोई भी भक्त जब डेरा छोड़ना चाहता था तो बाकी के भक्त उसकी जान के दुश्मन बन जाते थे। इसके अलावा पूरा परिवार ही भक्त बनता था, व्यक्ति अपने परिवार से प्रेम के चलते परिवार का मन रखने के लिए गुरमीत राम रहीम का भक्त बना रहता था।

मैं जब हिन्दू पंथ में फ़ैली कट्टरता और साम्प्रदायिकता के बारे में लिखता हूँ तो मेरा विरोध कई सारे हिन्दू करते हैं, वो कहते हैं कि तुझे सारी बुराइयां हिन्दुओं में ही नज़र आती हैं ?

और उसके बाद मेरे सामने मुसलमानों की बुराइयों की एक लम्बी लिस्ट रख दी जाती है और कहा जाता है कि इस पर बोल कर दिखा, कुछ लोग आकर कहते हैं कि हिन्दू इतने ही बुरे हैं तो अपना नाम बदल ले,कुछ लोग कहते हैं कि मैं पाकिस्तान चला जाऊं वगैरह वगैरह।

मेरी तरह ही मेरे कुछ मुसलमान दोस्त लेखक भी हैं, वो मुसलमानों के बीच फ़ैली हुई कुरीतियों के खिलाफ लिखते हैं, उनकी वाल पर जाकर मैं देखता हूँ तो उन्हें भी मुसलमान आकर उसी तरह डांट रहे होते हैं जैसे मुझे हिन्दू डांटते हैं।

मुसलमानों की कुरीतियों के बारे में लिखने वाले मुसलमान दोस्तों को संघ का दलाल, मुसलमानों को बदनाम करने वाला, इस्लाम छोड़ दो, वगैरह वगैरह ऊलजुलूल कमेन्ट मिलते हैं।

असल में हम सब गुरमीत राम रहीम के भक्तों जैसे दिमाग वाले लोग ही हैं, हम आज़ाद दिमाग से सही गलत का फैसला करने की समझ गँवा बैठते हैं, हम अपने सम्प्रदायों की गुलामी को ही धर्म समझ बैठे हैं।

धर्म का नाम हिन्दू या मुसलमान नहीं है, दुनिया में धर्म तो एक ही हो सकता है, वह है इंसान का धर्म। हिन्दू मुसलमान सम्प्रदायों का नाम है। पूजा नमाज़, व्रत, रोज़ा, उपवास, टोपी, चोटी, दाढ़ी, बुरखा, घूँघट, बकरा, गाय, अरबी, संस्कृत का सम्बन्ध धर्म से है ही नहीं।

जो लोग जिस सम्प्रदाय में पैदा हुए हैं और उसकी कुरीतियों के खिलाफ लिख बोल रहे हैं, वही लोग उस सम्प्रदाय के लोगों को अज्ञान से बाहर निकाल सकते हैं, दूसरे के सम्प्रदाय की बुराई देखने से आपका कोई फायदा नहीं होगा।

जो मुसलमान लोग, हिन्दू सम्प्रदाय की बुराइयां देखते हैं इससे उनका अपना कोई भी फायदा नहीं होने वाला, इसी तरह जो हिन्दू लोग, मुसलमानों की बुराइयां खोजते रहते हैं वो हिन्दुओं का कोई भला नहीं कर रहे, भला तभी होता है जब आप अपनी कमी खोजते हो और उसे दूर करने की कोशिश करते हैं।

मैं अपने मुस्लिम लेखक दोस्तों द्वारा मुसलमानों की कमियों पर लिखी गई पर कभी कमेन्ट नहीं करता, क्योंकि उससे मुसलमान डर सकते हैं कि देखो ये हिन्दू लोग हमारी मज़ाक बना रहे हैं। इसी तरह से अगर हिन्दुओं की कुरीतियों के खिलाफ लिखी गई किसी पोस्ट पर मुसलमान आकर समर्थन में कमेन्ट करते हैं तो उससे हिन्दू डर जाते हैं कि देखो मुसलमान हमारी मज़ाक बना रहे हैं।

इसलिए आपके अपने फायदे में यही है कि अपने बीच फ़ैली हुई बुराइयों को खोजिये और उन्हें जितनी जल्द हो छोड़ दीजिये, इसी में आपके समुदाय का फायदा है, दूसरे सम्प्रदायों की बुराइयां खोज कर खुद को ऊंचा समझने में इस दुनिया ने कई हज़ार साल बर्बाद कर लिए हैं।

गुरमीत राम रहीम के चेलों जैसे मत बनिये जो अपनी बुराइयों को देखने में असमर्थ हो गए और अपने गुरु पर लगे बलात्कार के आरोप से गुस्सा होकर शहर में आग लगाने और दूसरों को मारने के लिए निकल पड़े थे।

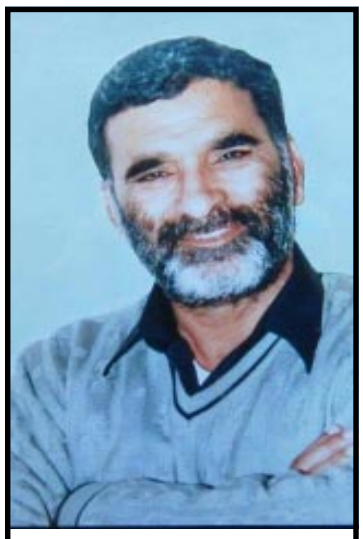

राम चन्द्र छत्रपति/ आओ चुप्पियों में बोलें

सिरसा में जिस वक्त राम चंद्र छत्रपति ने अखबार शुरू किया तब हर तरफ एक अजीब सा सन्नाटा था। एक तो राज के खिलाफ कोई बोल नहीं पाता था और दूसरा डेरा सच्चा सौदा के भीतर हो रही अनैतिकताओं पर सब देख कर भी खामोश थे।

राम चंद्र छत्रपति ने तब इस सन्नाटे को तोड़ने का साहस दिखाया। हमे भीतर तक रोमांचित कर देता है यह अहसास कि उनके बोलने भर से ना सिर्फ निजाम की पेशानी पर पसीना आया बल्कि डेरा की मजबूत दीवारे भी दरकने लगी । छत्रपति भी बाकी खामोश लोगो की तरह चुप्पी मार जाते तो आज राम रहीम के जुल्म को उनकी मंजिल ना मिलती। दुनिया ने देखा है छत्रपति का साहस और नकाब खींचने की उनकी हिम्मत। हम जैसा ही आम आदमी था वह, हम जैसा ही अमीर था, हम जैसा ही पढा लिखा था, हम जैसा ही चलता फिरता बोलता था, हम जैसा ही खाता था और खास बात कि वह भी इसी ग्रह का था। बाहर ग्रह से नही आया था बोलने।

सन्नाटा आज भी पसरा है चारों ओर। बोलने पर सख्त पाबंदियां हैं। जिन पर बोलने की जिम्मेदारी है उनकी कुंडलियां निजाम के हत्थे चढ़ गई है। ऐसे में उन की तरफ देखते रहने का कोई फायदा नहीं। अपने अपने हिस्से की अभिव्यक्ति की जिम्मेदारी के साथ अन्याय को चिन्हित करते हुए सलीके से आवाज उठाते रहना ही सही सन्दर्भों में छत्रपति को याद करना है।

आज छत्रपति के जन्म दिन पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए प्रतिबद्धता जताएं कि हम अपने अपने हिस्से की सच्चाई जरुर बोलेंगे इन चुप्पियों के बीच।

– वीरेंद्र भाटिया